जीवन हो तो ऐसा

● ब्रह्माकुमार मुरली, बैरागढ़ (भोपाल)

मैं ने पान की छोटी दुकान मात्र 15 साल की उम्र में खोली। इस कारण गुटखा, बीड़ी, तम्बाकू खाने वालों का संग मिला जिससे मैं भी इन चीजों का आदी होता गया। आर्थिक समस्या और बुरे संग के कारण पढ़ाई ज्यादा नहीं की। बढ़ती उम्र के साथ बुरी आदतें बढ़ती गई। दोस्तों के साथ हर शनिवार घूमने जाना, होटल में तामसिक खाना, पीना और रात को दो बजे घर जाना, ये सब आम बातें बन गईं।

कमाने के चक्कर में डूब गया कर्ज में

घर वाले मुझसे डरने लगे थे और साथ-साथ बहुत परेशान भी रहने लगे थे। लड़ाई-झगड़ा करना मेरा स्वभाव बन गया था। खाने में कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती थी तो थाली उठाकर दीवार पर फेंक देता था। नशे में जब घर जाता था तो जूते-चप्पल सहित सो जाता था। सुबह एक जूता कहां, तो दूसरा जूता कहां मिलता था। कुसंग का कुरंग और ही दबंग बनाता गया। पैसे जल्दी कमाने के चक्कर में जुआ खेलने लगा, सटोरियों के साथ उठना-बैठना हो गया। फिर हर वक्त पुलिस का भय सताने लगा और ज्यादा कमाने के चक्कर में कब कर्ज में डूब गया, पता ही नहीं चला।

दोस्त ने दुकान पर कोर्स कराया

खराब खान-पान के कारण मेरी दृष्टि-वृत्ति तमोप्रधान हो गई। मन अशांत रहने लगा। सारा दिन मन में व्यर्थ संकल्पों का तूफान मचा रहता। मानसिक तनाव रहने लगा। इन सबसे छूटना तो चाहता था परंतु रास्ता पता नहीं चल रहा था। फिर आत्महत्या का विचार भी कई बार आने लगा। उन्हीं दिनों मेरा एक पुराना मित्र, जो कभी बुरी आदतों में मेरा साथी था और कुछ समय से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र जाने लगा था, आकर मुझे आश्रम चलने के लिए प्रेरित करने लगा परन्तु किसी न किसी बात का कारण बताकर मैं उसे टरका देता था। उस भाई ने जब देखा कि यह आश्रम नहीं चल रहा है तो दुकान पर ही आकर कोर्स कराना शुरू किया।

जीवन हो तो ऐसा

कोर्स करने पर चिड़चिड़े मन को जैसे कि रास्ता मिल गया। धीरे-धीरे क्लास में जाने लगा, मुरली सुनने लगा और मुरली सुनते-सुनते कब मुरलीधर से प्यार हो गया, पता ही नहीं पड़ा। शान्ति मिलने लगी, जीवन बदल गया, दृष्टि, वृत्ति पवित्र हो गई, खानपान सतोप्रधान हो गया और जीवन का यह लक्ष्य बना लिया कि मुझे भी मास्टर मुरलीधर बनकर बाबा का नाम रोशन करना है।

जानवर जैसे को बनाया मन्दिर लायक

परिस्थितियाँ अब भी आती हैं पर हिलाती नहीं हैं। बात चाहे छोटी हो या बड़ी, मुख से निकलता है, जाने दो, इस प्रकार सेकण्ड में फुलस्टॉप लग जाता है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। अब मुझे किसी की भी बात बुरी नहीं लगती। कोई गाली भी देता है तो मुसकराता रहता हूँ। ऐसा परिवर्तन देखकर घरवाले, पड़ोसी अचरज खाते हैं कि इसे किसका जादू लग गया। मैं भी कहता हूँ, हाँ, मुझे शिव बाबा ने जादू लगाया है। मैं चाहता हूँ, ऐसा जादू हर व्यक्ति को लगे तो कितना अच्छा हो। शुक्रिया है बाबा का जिसने एक जानवर जैसे व्यक्ति को मंदिर के लायक बना दिया।

बदल जायेंगी रेखाएँ और दशाएँ

अब बाबा के घर की हर प्रकार की सेवा जी जान से करता हूँ। हाथों की लकीरें, दशायें सब बदल गई हैं। आश्रम की आदरणीया बहनों ने भी पालना देकर मुझे बहुत आगे बढ़ाया है। अब यह जीवन शिवबाबा की दी हुई अमानत है। इसे तन, मन, धन सहित सफल करना है। मेरा सब पाठकों से अनुरोध है कि एक बार अपने नज़दीक के ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर सात दिन का कोर्स अवश्य करें। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके जीवन की रेखायें और दशायें भी बदल जायेंगी और आप भी गर्व के साथ कहेंगे कि जीवन हो तो ऐसा। शुक्रिया बाबा शुक्रिया। ❖